12-11 hrs.

12.12 hrs.

MATTERS UNDER RULE 377

(i) NEED FOR REMUNERATIVE PRICES FOR POTATO-GROWERS OF U.P.

श्री बी० डी० सिंह (फूलपुर) : देश में आलू के कुल उत्पादन का लगभग आधा भाग उत्तर प्रदेश में उत्पन्न होने लगा है। इस वर्ष यहां लगभग 47 लाख मीट्रिक टन आलू के उत्पादन की आशा है। परन्तु, यह बड़ी चिंता का विषय है कि किसान का अधिक परिश्रम उसके उत्पादन के मूल्य में ह्रास का कारण हो जाता है। कृषि मूल्यों का अधिक उतार-चढ़ाव किसान के लिए कभी अभिशाप बन जाता है। उत्पादन प्राप्ति के समय उसका मूल्य न्यूनतम स्तर पर आ जाता है और पूंजीपतियों, व्यापारियों द्वारा असहाय किसान का भयंकर शोषण किया जाता है।

[MR. DEPUTY-SPEAKER *in the Chair*]

मैं, माननीय कृषि मंत्री जी से आग्रह करूंगा कि वे उत्तर प्रदेश के आलू उत्पादकों की ओर अधिक सक्रिय ध्यान दें और ऐसी परिस्थिति उत्पन्न करने में सहायता करें जिसमें किसानों को अपनी उपज का उचित मूल्य मिल सके। नाफेड संस्था कृषि वस्तुओं के विपणन का कार्य करती है। नाफेड को प्रदेश में अधिक सक्रियता से उचित मूल्य पर आलू का अधिक से अधिक क्रय करना चाहिए जिससे मूल्य में हानिप्रद ह्रास न हो। उत्तर प्रदेश से आलू दूसरे प्रदेशों विशेषकर आसाम को बड़ी मात्रा में निर्यात किया जाता है। रेल वैगनों के अभाव के कारण प्रदेश से आलू के निर्यात में बाधा पड़ती है। फलत: मूल्य बहुत नीचे गिर जाते हैं और किसानों को हानि उठानी पड़ती है। इस वर्ष मांग के अनुसार वैगनों की व्यवस्था की जाए। प्रदेश सरकार ने माननीय रेल मंत्री जी से सम्पर्क किया है। यदि इस संबंध में समय से आवश्यक कार्यवाही न की गई तो किसानों में व्याप्त निराशा एवं क्षोभ किसी भी समय उग्र हो सकता है।

आलू एक शीघ्र नाशवान कृषि उत्पादन है। उसकी खुदाई के बाद उत्पादन को किसान अधिक समय तक अपने पास सुरक्षित रखने में असमर्थ रहता है। प्रदेश में भंडारण व्यवस्था बहुत ही अपर्याप्त है। शीतगृहों की संख्या आवश्यकता से बहुत ही कम है। सीमित संख्या के कारण शीतगृह अनेकों प्रकार से किसानों का शोषण करते हैं। उनका लाभ अधिकतर प्रभावशाली लोगों को मिलता है। अतएव, जो भी कार्यवाही की जाए, समय से की जाए, यह अधिक महत्व की बात है।

(ii) SHORTAGE OF EDIBLE OILS AND VANASPATI

DR. VASANT KUMAR PANDIT (Rajgarh): During recent months, there has been a steep price rise of oil-seeds, groundnut and edible oils as well as vanaspati. The general crisis that has been affecting the country's economy since 1980 has now touched yet another essential article of the common consumer viz., vanaspati and edible oils. Nowhere, not even through the public distribution system, edible oil and vanaspati are available at the fixed price. The vanaspati manufacturers are taking advantage of the recent price rise of oil-seeds and edible oils. There is a planned moved to create shortage of vanaspati and edible oils. The merchants complain that vanaspati is not readily available at the Government exfactory fixed price of Rs. 192 per tin.

In the absence of firm steps by the Government to hold the price line we find the manufacturers, traders, anti-social elements, hoarders, smugglers and blackmarketeers in these essential daily items of the common man.

The entire policy and the plan of the Government has failed. There has been no appreciable rise in the acreage under oil-seeds, availability of